IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 25, Issue 9, Series 1 (September, 2020) 68-72
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

कनिष्क की धार्मिक नीति

डा. लता व्यास
व्याख्याता
चौधरी बल्लू राम गोदारा राजकीय कन्या महाविद्यालय श्री गंगानगर

विम कैडफिसेस के पश्चात कनिष्क कुषाण वंश का शासक हुआ वह भारत का महान कुषाण सम्राट था। उसका कैडफिसेस से क्या सम्बन्ध था यह ज्ञात नहीं है, कनिष्क की राजधानी पुरुषपुर गांधार में थी कश्मीर, पूरा पंजाब और पटना की गंगाघाटी उसके राज्य में शामिल थे।

अपने पूर्वजों की भाँति कनिष्क भी एक धर्म सहिष्णु शासक था। उसने न केवल यूनानी देन मण्डल को बल्कि भारत के सम्पर्क में आकर सभी भारतीय धर्मों को भी अपने सिक्कों एवं अभिलेखों में स्थान दिया। और ईरानी, यूनानी, एवं भारतीय देवों की एक साथ पूजा उसकी धार्मिक सहिष्णुता को सिद्ध करती है। इसके लिये हमारे पास पर्याप्त साक्ष्य है।

कनिष्क की मुद्राओं का पृष्ठ भाग विविधता की दृष्टि से काफी समृद्ध है। मुद्राओं के पृष्ठ भाग पर एशिया के विभिन्न सम्प्रदायों के देवी देवताओं की आकृतियाँ है। इसमें ईरानी यूनानी एवं भारतीय देवी देवताओं के अतिरिक्त कुछ ऐसी भी आकृतियां प्राप्त होती हैं जिनकी अद्यावधि पहचान नहीं हो सकी है, इस प्रश्न का निश्चयात्मक उत्तर देना सम्भव नहीं हो सका है कि कनिष्क ने मुद्रा के पृष्ठ भाग पर क्षेत्र विशेष के देवी देवताओं का अंकन क्यों किया।इस मामले में रोजेन फील्ड महोदय का मत भी काफी महत्वपूर्ण है। उनके अनुसार प्राचीन काल में मुद्राएं केवल आर्थिक गतिविधियों का संचालन ही नहीं करती थी अपितु ये राज्य एवं राजा के व्यक्तित्व की उदवाहक भी थी। भले ही मुद्रा के पृष्ठ भाग के अनेक देवी देवताओं की पहचान करने में कठिनाई हो, उनके प्रतीक स्पष्ट न हों किन्तु ये मुद्राएं निश्चित ही शासक की धार्मिक उदारता, सम्पन्नता, साम्राज्य का विस्तार एवं राज्य को दैवी समर्थन प्राप्त होने की अभिव्यक्ति करती हुई दिखाई देती है।

यूनानी देव– कनिष्क के कुछ सिक्कों पर यूनानी सूर्य देव सेलियाँस का अंकन है। मुद्राओं पर यह प्रभामण्डल से युक्त है इसके मस्तक के पीछे सूर्य का अंकन है, इसका दाहिना हाथ आगे की ओर बढ़ा है एवं बायां पीछे नितम्ब पर अवस्थित है।

आर दोक्षो–मुद्राओं पर इसका अंकन स्थानक मुद्रा में देवी के रूप में हुआ है। कुछ मुद्राओं पर देवी का अंकन सिंहासना रूप में भी हुआ है देवी का पैर पाद–पीठ पर अवस्थित है और देवी प्रभामण्डल से युक्त है।

ईरानी देव– कनिष्क के सिक्कों पर ईरानी देव मिइरो अथवा सूर्यदेव का अंकन है जो लम्बा कोट पहने बांया हाथ कमर पर और दाहिना हाथ ऊपर उठाए हुए अंकित हैं जिसके सिर से पीठ तक किरणें निकल रहीं है। माओ अथवा चन्द्रदेव का अंकन कनिष्क के सिक्कों पर मुकुट पहने हुए तलवार धारण किए हुए किया गया है ऐसे ही अनेक ईरानी देवों जैसे लैग्गो, अथसोयिनि, अहुरमज्दा आदि का अंकित कनिष्क के सिक्कों पर है।

ब्राह्मण धर्म – कनिष्क के कतिपय सिक्कों के पृष्ठ भाग पर स्कंदों, महासेनों, कुमारो और विजागो विशाख के साथ तीन प्रतिकृत है, देवताओं की सेना का नायकत्व करने के कारण स्कन्द महासेन के नाम से प्रख्यात है।

कुषाण काल के समय की चार जगह से सूर्य प्रतिमा प्राप्त हुयी है जिसमें बोध गया, भाजा, लाला भगत और अनन्तगुफा हैं।

बोध गया में स्तूप की रैलिंग के बीच में चित्र बना है सूर्य को चार घोड़ो से जुते हुए रथ में सवार दिखाया गया है उसके दूसरे तरफ एक घेरे में नारी चित्र हैं। चित्र के एक ओर पुरुष सा प्रतीत होता है और दो महिलाएं ऊषा अथवा प्रत्यूषा हैं, जो अन्धकार एवं प्रकाश को करती हुई दिखायी गयी हैं। यहाँ रथ के पीछे मध्यभाग में एक किरणों की छतरी है और उसके हाथ में एक छाता है विद्धानों ने उसे सूर्य कहा है। यह सम्भवतः कनिष्क के समय की है।

कनिष्क का बौद्ध धर्म के प्रति अधिक झुकाव था और उसे बौद्ध भी माना जाता है पर वह शैव धर्म के प्रति भी आस्था रखता था, यह उसके सिक्कों से स्पष्ट है। उसके बहुत से सिक्कों पर शिव की मूर्ति भी अंकित है। कनिष्क के

सिक्कों पर शिव दो और चार हाथों से युक्त दिखाये गये है। कनिष्क के सिक्कों के पृष्ठ भाग पर स्त्री की खड़ी आकृति, दाढ़ी युक्त अग्निदेव, खड़ी मुद्रा में वायुदेव, बैठा चन्द्र देव, मुकुटधारी दाढ़ी युक्त देव कभी कभी दो मुंहे घोड़े की सवारी करता हुआ, मुकुटधारी सूर्यदेव, मुकुटधारी देव, देवी, द्विभुजी या चतुर्भुजी खड़ी मुद्रा में शिव कमण्डल, डमरू, नरमुण्ड, त्रिशूल आदि लिए अंकित है।

कनिष्क की स्वर्ण मुद्रा के अग्रभाग में राजा की खड़ी आकृति लम्बा कोट, पायजामा, नुकीली टोपी, बांये हाथ में माला, दाहिने हाथ से हवन कुण्ड में हविष डाल रहा है। हवन कुण्ड में हविष डालने से उसकी भारतीय वैदिक धर्म के प्रति आस्था सिद्ध होती है।

बौद्ध धर्म– बौद्व इतिहस में यह युग अधिक महत्व का है तथा कनिष्क उत्तरी बौद्ध परम्परा में धर्म के महान संरक्षक के रूप में स्मरण किया जाता है। असंख्य अवशेष तत्कालीन बौद्ध धर्म की महत्ता तथा जनप्रियता का प्रमाण देते है। और यही वह समय था जब बौद्ध धर्म एशिया तथा सुदूर पूर्व तक विस्तृत होना प्रारम्भ हुआ।

सारनाथ से कनिष्क के काल का एक लेख मिला है जो बौद्ध प्रतिमा पर लिखा गया है। लेख का मूल पाठ इस प्रकार है

'' महाराजा कनिष्क के शासन काल में संवत्सर 3 हेमन्त 3 दिवस 22 के पूर्व भिक्षु पुष्य बुद्ध के साथ रहने वाले त्रिपिटिक के ज्ञाता बल द्वारा बोधिसत्व का छत्र और यष्टि वाराणसी में भगवान बुद्ध के चक्रमपथ में स्थापित किया गया। उसके माता पिता के साथ उपाध्याय एवं आचार्य के साथ क्षत्रप वनस्पर और खरपल्लान के साथ चारों परिषदों के हित और सुख के लिए।''

(कनिष्क प्रथम कालीन सारनाथ बौद्ध प्रतिमा लेख)

कनिष्क की प्रसिद्धि विजेता की अपेक्षा बौद्ध प्रचारक के रूप में अधिक है। संयुक्तरत्नपिटिक के अनुसार प्रारम्भ में कनिष्क रक्त पिपासु, नरपिशाच था। परन्तु बौद्ध धर्म ग्रहण करने के बाद उसमें आमूल परिवर्तन हो गया था। ऐसा लगता है कि पाटलिपुत्र के ऊपर आक्रमण करने के समय वह प्रसिद्ध बौद्ध अश्वघोष के सम्पर्क में आया। और कुछ समय के बाद बौद्ध विद्वान हो गया तथा बौद्ध धर्म के प्रभाव के अन्तर्गत उसने शीघ्र ही साधुता ग्रहण कर ली। कनिष्क के बौद्ध होने के कई प्रमाण हैं बौद्ध ग्रन्थ सूत्रालंकार में लिखा हुआ है कि आ–नि– चा (कनिष्क) की अनुरक्ति एक मात्र बौद्ध धर्म में थी। धर्म पिटिक निदान सूत्र भी कनिष्क को बौद्ध कहता है कनिष्क सर्वास्त्र वादी बौद्ध था। यह बात तक्षशिला से प्राप्त एक लेख से स्पष्ट हो चुकी है।

बुद्ध का अंकन भी कनिष्क ने अपने सिक्कों में कराया और कई स्तूप एवं बुद्ध मूर्तियों का निर्माण भी कराया। कनिष्क की मुद्राओं पर बुद्ध की मूर्ति खड़ी हुई और बैठी हुई दोनों स्थितियों में मिलती है। उस पर 'शकमनबौद्धो' अर्थात शाक्य मुनि बुद्ध का या केवल बोदो लेख लिखा मिलता है। शाह जी की डेहरी से उपलब्ध सुवर्ण मंजूषा पर भी बुद्ध की मूर्ति मिलती है।

मथुरा जिले के माट नामक ग्राम के एक टीले से मिले ब्राह्मी अभिलेख में किसी पुण्य दान द्वारा बोधसत्व की एक मूर्ति कनिष्क के तेईसवें संवत की ग्रीष्म ऋतु में स्थापित किये जाने का उल्लेख है। कनिष्क काल की एक और 10 फुट 6 इंच ऊंची बोधिसत्व की मूर्ति सारनाथ की खुदाई में प्राप्त हुई है मूर्ति का सिर खण्डित है और बांया हाथ कटि भाग पर न होकर जांघ पर है।

कनिष्क के समय में बौद्ध धर्म की चतुर्थ बौद्ध संगीति भी हुई थी। महोली से मिली बोधिसत्व की खड़ी मूर्ति पर 92(170 ई0) की तिथि है। लगता है राज्यरोहण के तत्काल बाद कनिष्क ने बौद्ध मूर्तियों को आंकने का आदेश दिया होगा। प्रारम्भिक बुद्ध प्रतिमाओं में कटरा की सिंहासन पर पद्मासन मुद्रा में बैठी, तथा इसी मुद्रा वाली अन्योर से प्राप्त बुद्ध मूर्ति गिनाई जा सकती है।[1]

पेशावर के निकट कनिष्क ने एक बड़ा स्तूप और मठ बनवाया था। इस स्तूप में उसने बुद्ध के अवशेष रखे, इस स्तूप की चीनी यात्रियों ने बहुत प्रशंसा की है। खुदाई करने पर वहाँ एक कांसे की मंजूषा और बुद्ध की अस्थियां निकली। इसमें ब्रह्मा, इन्द्र, और सूर्य चन्द्रमा के बीच खड़े कनिष्क की मूर्तियां भी निकलीं हैं। यह सब उसकी धार्मिक सहिष्णुता को सिद्ध करता है। उसके जैन धर्म से संबंधित भी कुछ साक्ष्य मिले हैं।

जैन धर्म– उसने जैन धर्म को भी सब धर्मों की भांति आश्रय दिया था। लखनऊ संग्रहालय में एक विभाजित आधार लेख वाली जिन प्रतिमा है जो टूटी हुई है। य़द्यपि उसके आधार अंशो को जोड़कर उसकी पहचान कुषाण काल में पहुंचती है। आधार स्तम्भ के मध्य में एक चिन्ह है, चक्र पर नन्दी पद है और दो मछलियां उसे कमल पर उठाये हैं। लेख में ऊपर 79 ई0 लिखा है जो कनिष्क का समय है यह प्रतिमा अर्हत नन्दवत्रा की है नन्दवत्रा जैन धर्म के 18वें तीर्थंकर आदिनाथ थे।

एक बिना नाम की आदि और ऋषभ नाथ की प्रतिमा मिली जो पाद लेख के अनुसार 84 ई0 की है यह भी कनिष्क के समय की प्रतीत होती है। स्तम्भ चक्र में भक्तों को आधार पर दिखाया गया है। लेकिन एक छोटी सी सांढ़ की मूर्ति, जो प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ की पहचान है उनकी अनुपस्थिति की पूर्ति करती है। मथुरा कंकाली टीले से जैन धर्म से संबंधित बहुत सी मूर्तियां मिली हैं। कंकाली टीले से एक तीर्थंकर की प्रतिमा भी मिली है।[4] कंकाली का कला वैभव अब राज्य संग्रहालय लखनऊ के पुरातत्व अनुभाग में सुरक्षित है। इस तरह अन्ततः समस्त साक्ष्य कनिष्क को धर्म सहिष्णु सिद्ध करते हैं।

कनिष्क के उत्तराधिकारियों की धार्मिक नीति– कनिष्क के बाद कुषाण वंश की गद्दी पर उसका उत्तराधिकारी वशिष्क बैठा। कनिष्क की भांति वशिष्क भी एक धर्म सहिष्णु शासक था। वशिष्क का साँची से एक लेख मिला है, जो एक प्रतिमा पर लिखा है। इसमें भगवान बुद्ध की प्रतिमा स्थापना का वर्णन है। तथा धर्म देव निर्मित विहार में भगवान शाक्य मुनि की मूर्ति स्थापित की गई थी।

वशिष्क के बाद हुविष्क कुषाण सिंहासन पर बैठा। हुविष्क सम्भवतः बौद्ध धर्म का अनुयायी था। उसने मथुरा में बौद्ध स्तूप का निर्माण कराया था तथा उसी में शाक्य मुनि बुद्ध की प्रतिमा स्थापित करायी थी। काबुल शहर से 30 मील पश्चिम में वर्डाक स्थल से हुविष्क के शासन के 51वें (129ई0) वर्ष का लेख मिला है। इसमें वग्रमरेग्र नामक व्यक्ति द्वारा वग्रमरिग्र विहार के स्तूप में भगवान शाक्य मुनि के शरीर को प्रतिष्ठापित किये जाने का उल्लेख है, और कहा गया है कि इस पुण्य कार्य का लाभ महाराज हुविष्क को उसके भाई हस्थूणमरेग्र को तथा उसकी जाति के मित्रों, साथियों को प्राप्त हो। हुविष्क के शासन काल में बौद्ध प्रतिमाओं की स्थापना स्थान–स्थान पर की गई। हुविष्क का मथुरा से ही

एक प्रस्तर लेख मिला है जिससे उसके ब्राह्मण धर्म के प्रति आस्था का पता चलता है जो उसकी धार्मिक सहिष्णुता को सिद्ध करता है। लेख में साला प्राचीनीक सरुकमाण पुत्र खरासले राधिपति वकन स्वामी द्वारा अक्षयनीवीं देने का उल्लेख है।

जिससे 100 ब्राह्मणों को भोजन कराने तथा उसका पुण्य लाभ उसके वंशजों को मिले ऐसा उल्लेख है।

हुविष्क की मुद्राओं पर भारतीय देवी देवताओं का अंकन है। भारतीय देवताओं में स्कन्द, शिव, विशाख, गणेश और विष्णु आदि अंकित हैं। हुविष्क ताम्र मुद्राओं में भी शिव पार्वती के पुत्र गणेश का चित्रण हुआ है, जो गजमुखी है, इनके हाथों में धनुष बाण है किन्तु यह गणेश परम्परागत गणेश जैसे लम्बोदर नहीं है। अतः कुछ विद्वान इसे गणेश न मानकर रूद्र शिव मानते हैं। कुछ मुद्राओं पर चतुर्भुजी देव अंकित हैं, जिनके हाथों में वज्र, त्रिशूल, जलपात्र और पुष्प माला है विद्वान इसे विष्णु मानते हैं। हुविष्क ने जैन धर्म को भी समान आदर दिया। लखनऊ संग्रहालय की एक जैन प्रतिमा की पीठ पर लेख अंकित है जिसमें लिखा है ''ईसवी सन 126 में हुविष्क के शासन काल में परिवार के यश लाभार्थ संभव(तीसरे जैन तीर्थंकर) की प्रतिमा प्रतिष्ठापित की गई।

हुविष्क के सिक्कों में यूनानी, ईरानी एवं भारतीय देवताओं का अंकन मिलता है। यूनानी देवताओं में साओएशाकिलो, नन आदि का अंकन है। साओएशाकिलो युद्ध का देवता है, इसका चित्रण हुविष्क की स्वर्ण मुद्राओं पर तीर और तलवार लिये हुए हुआ है।

नन या नैना एक देवी है हुविष्क की मुद्राओं में उसे सिंहासनारूढ़ दिखाया गया है अतः कुछ विद्वान उसकी तुलना सिंहवाहिनी देवी दुर्गा से करते हैं। इसी तरह ईरानी देवताओं में मिइरो, माओ, अथसोथिनि अथवा अथ्थो, ओअनिन्दो, ओअड़ो आदि का अंकन है। ईरानी देव मिइरो (सूर्यदेव) को सिक्कों पर किरणों से युक्त खड़ी मुद्रा में दिखाया गया है, जिसके दाहिने हाथ में एक यंत्र है जो सूर्य का कालमापक यंत्र माना जाता है। अथसोथिनि अथवा अग्नि देव हुविष्क के सिक्कों पर यह देवता दांई ओर मुख करके खड़ा है और उसके कंधे से अग्नि की ज्वालायें निकल रहीं हैं। हुविष्क की मुद्राओं एवं लेखों में विभिन्न धर्मों के देवताओं का अंकन उसकी धार्मिक सहिष्णुता को सिद्ध करता है।

हुविष्क के बाद वासुदेव शासक हुआ यह भी एक धर्म सहिष्णु शासक था। मथुरा संग्रहालय में कुषाण युगीन मूर्ति में एक राजा अपने एक साथी के साथ शिव लिंग की तरफ श्रद्धा भक्ति से बढ़ता हुआ अंकित है। दोनों ने कुषाण वेश धारण कर रखा है उनमें से एक सम्भवतः वासुदेव हैं यह भी पूर्वजों की भांति यूनानी, ईरानी एवं भारतीय देवों की पूजा करता था।जो उसकी सहिष्णुता का पुख्ता प्रमाण है।

कुषाण काल में भारतीय धर्मों से जुड़ी हुई अनेक मूर्तियों का निर्माण हुआ है। जिसमें बुद्ध महावीर, लक्ष्मी, विष्णु, शिव आदि प्रमुख हैं। आसन मूर्तियों में राज्य संग्रहालय लखनऊ में संग्रहीत लक्ष्मी की कुषाण कालीन प्रतिमा उल्लेखनीय है। इसमें द्विभुजी देवी उत्कूटिकासन मुद्रा में बैठी है। दोनों चरण आपस में अप्राकृतिक ढंग से घुसे हैं, और पंजे बाहर निकले हुए हैं उनका दाहिना हाथ अभय मुद्रा में स्थित है और बांये हाथ में नालयुक्त पूर्ण विकसित कमल है उभयपार्श्वों में अनुचर हैं कुछ आसन मूर्तियों में पद्मधारी देवी की बांयी गोद में शिशु अंकित है लक्ष्मी की एक और कुषाण कालीन मूर्ति बानगढ़ से प्राप्त हुई है।

मथुरा से कुषाण कालीन नृवराह प्रतिमा मिली है जिसका सम्पूर्ण शरीर चतुर्भुजी मानव का है। वराह मुख खण्डित हो चुका है इस प्रतिमा के वक्ष पर तीर्थंकर प्रतिमाओं के आधार वाला श्रीवत्स उत्कीर्ण है। एक फलक में वसुदेव एक टोकरी में कृष्ण को अपने शीष पर उठाकर यमुना पार कर रहे हैं। और दूसरे में कृष्ण को केशी नामक राक्षस से युद्ध करते दिखाया गया है। बलराम की भी कई प्रतिमायें मिली हैं।

कौशाम्बी से कुषाण कालीन गजलक्ष्मी की मृण्मूर्ति मिली है। इसमें देवी का अभिषेक करने वाले गजों को देवी की केशसज्जा में ही संयोजित कर दिया गया है। फलकों पर देव प्रतिमाओं का अंकन कुषाणकालीन मूर्तियों में किया गया है। मथुरा के एक कुषाणकालीन शिलाफलक पर चार देव प्रतिमायें एक साथ उत्कीर्ण पाई गयी हैं। इस शिलाफलक पर उकेरे गये ये देवी देवता यह प्रमाणित करते हैं कि कुषाण काल में शैव व वैष्णव धर्मावलम्बियों में कितना हेलमेल था। धार्मिक सहिष्णुता की दृष्टि से कुषाणकालीन मथुरा मूर्ति कला अद्वितीय थी। वहाँ जैन, बौद्ध तथा ब्राह्मण धर्म एक साथ प्रचलित थे। कुषाण काल में जैन धर्म भी उन्नत अवस्था में था। ई0 पू0 द्वितीय शताब्दी के मध्य में एक जैन मंदिर के विद्यमान होने का प्रमाण एक शिलालेख से मिलता है जिसमें उत्तरदासक नामक श्रावक द्वारा एक प्रासाद तोरण समर्पित किये जाने का उल्लेख है। एक अन्य शिलालेख में जो एक शिल्पाकित सरदल खण्ड़ पर उत्कीर्ण है और जो कनिष्क प्रथम से ठीक पहले के युग का है।

पुरातत्व संग्राहालय मथुरा में सुरक्षित एक आयाग पट्ट भी लगभग इसी अवधि का है। इस पर उत्कीर्ण शिलालेख में लोणशोभिका की पुत्री वासुनामक गणिका द्वारा निग्रन्थ अर्हयातन में एक अर्हत मन्दिर, सभा भवन, प्याऊ, और एक शिल्पा पट्ट समर्पित किये जाने का उल्लेख हैं एक अन्य शिलालेख में जो सम्भवतः कुषाणयुग का है और एक खण्ड़ित प्रतिमा के पादपीठ पर अंकित है, अर्हतों के मंदिर में महावीर की मूर्ति प्रतिष्ठापन और एक जिनालय के निर्माण का उल्लेख है। बहुसख्य तीर्थकर मूर्तियों और जैन देवों की खोज से यह सिद्ध होता है कि कुषाणयुग में मथुरा में अनेक जैन मन्दिर विद्यमान थे।

इन सभी तथ्यों से कुषाणों की धार्मिक सहिष्णुता सिद्ध हो जाती है क्योंकि कुषाणों के समय में सभी धर्म समान रूप से फले–फूले, चाहे वह भारतीय ब्राह्मण धर्म हो या बौद्ध एवं जैन।

नाग वंश– कुषाणों के पतन के बाद मध्य भारत तथा उत्तर प्रदेश के भू–भागों पर शक्तिशाली नागवंश का उदय हुआ। गंगा घाटी में कुषाण सत्ता के विनाश का श्रेय नागवंश को दिया जाता है। पुराणों के विवरण से पता चलता है कि पद्मावती, मथुरा तथा कान्तीपुर में नागों का शासन था। पुराणों के अनुसार मथुरा में सात तथा पद्मावती में नौ नाग राजाओं ने शासन किया। ये नाग राजा शैव धर्म को मानने वाले थे। इनके किसी प्रमुख राजा ने शिव को प्रसन्न करने के लिये, धार्मिक अनुष्ठान करते हुए शिव लिंग को अपने सिर पर धारण किया था जिस कारण ये भार शिव कहलाने लगे। इस प्रकार की एक मूर्ति भी उपलब्ध हुई है। भार शिव राजाओं में सबसे प्रसिद्ध राजा वीरसेन था उसी ने कुषाणों को परास्त कर अश्वमेध यज्ञों का सम्पादन किया था।

प्रथम वर्ग के बाद नाग नामन्त वाले शासकों का द्वितीय वर्ग पद्मावती की सत्ता पर आया। इसमें भीम नाग, विभुनाग, प्रभाकर नाग, स्कन्द नाग, वृषभ नाग, व्याघ्र नाग, वसु नाग, देव नाग,आदि हैं। थपल्याल महोदय इन नागों का सम्बंध वाकाटकों द्वारा वर्णित भार शिवों से मानते हैं जो शैव धर्मावलम्बी थे। और अश्व

बलि देते थे उनके कुछ सिक्के भी मिले हैं जिन पर वृषभ, त्रिशूल, परशु आदि का अंकन है जो प्रायः शैव धर्म से सम्बंधित हैं। चम्पक ताम्रपत्र में दस अश्वमेध का उल्लेख हुआ है।

भारशिवों ने गंगा के तट पर दस अश्वमेध यज्ञ सम्पन्न किये और शिव को अपने साम्राज्य का पीठासीन देवता माना। भारशिवों ने वृषभ को अपना पावन प्रतीक माना,अपने सिक्कों पर उसका अंकन किया और तभी से वृषभ की महत्ता सम्पूर्ण राज्य में।सार्वभौमिक रूप से स्वीकार की गई। भारशिव राजनैतिक शैव बने रहे आधुनिक हिन्दू धर्म की नींव इन्हीं नागवंशीय सम्राटों ने रखी और इन्हीं के द्वारा निर्मित संरचना का पोषण वाकाटकों ने किया।

अंततः गुप्त सम्राटों ने उसका संवर्द्धन किया। मध्य भारत में शैव धर्मानुयायी नाग राजे ही सर्वाधिक शक्तिशाली थे। धर्म के विषय में वे प्रायः उदार और सहिष्णु थे। क्योंकि विदिशा, पद्मावती, मथुरा,अहिच्छत्र आदि अनेक प्रमुख केन्द्र जैन धर्म के भी पवित्र तीर्थ और अच्छे केन्द्र थे। जैन अनुश्रुतियों में नाग जाति को विद्याधरों का वंशज कहा गया है। तेईसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ के साथ इस जाति का घनिष्ठ सम्बन्ध था।नागराजे शैवधर्मावलम्बी होने के साथ साथ सहिष्णु शासक थे। नागों के बाद वाकाटकों ने शासन सम्भाला।

निष्कर्ष– शुंगो के बाद एवं गुप्तो के पूर्व भारत में कई राजवंशों ने शासन किया। जिनमें कण्व, सातवाहन, कुषाण, शक, पहलव, भारशिव आदि प्रमुख हैं।सातवाहन राजा भी शुंग राजाओं की भांति ब्राह्मण धर्म के समर्थक थे। सातवाहन अभिलेखों में प्राप्त विष्णुपालित, विष्णुदत्त, गोपाल आदि नामों से समाज में जहां एक ओर विष्णु पूजा के संकेत मिलते हैं वहीं, शिवदत्त, शिवभूति, भूतपाल, स्कन्द आदि से शिव पूजा के संकेत मिलते हैं। इसके अतिरिक्त नदी और नाग पूजा भी प्रचलित थी।

संदर्भ सूचि

1. राजवन्त राव एवं प्रदीप कुमार राव, पूर्वोक्त
2. सत्यकेतु विद्यालंकार, प्राचीन भारत का धार्मिक सामाजिक एवं आर्थिक जीवन
3. बलवन्त राव एवं प्रदीप कुमार राव, पूर्वोक्त
4. के0ए0 नीलकण्ठ शास्त्री एवं जी0 श्री निवासाचारी, पूर्वोक्त
5. राजवन्त राव एवं प्रदीप कुमार राव, पूर्वोक्त
6. नीहारिका, प्राचीन भारतीय पुरातत्व अभिलेख एवं मुद्राएं
7. विमल चन्द्र पाण्डेय, पूर्वोक्त
8. भिक्षु धर्म रक्षित, सारनाथ का इतिहास
9. श्रीराम गोयल, पूर्वोक्त
10. भिक्षु धर्मरक्षित, पूर्वोक्त